प्रामाण्य की उत्पत्ति

ज्ञान में सच्चाई कहाँ से आती है?

न्याय दीपिका (अधिकार 1) के आधार पर
जैन न्याय-शास्त्र का तार्किक विश्लेषण

NotebookLM

ज्ञान और उसकी सत्यता का संबंध

प्रमाण (Pramana)

जिसके द्वारा पदार्थों का सही निर्णय होता है (सम्यक् ज्ञान)। (प्रमाता, प्रमिति, और प्रमेय के निराकरण स्वरूप)

प्रामाण्य (Pramanyam)

प्रमाण की प्रमाणता या उसका सच्चापन (Validity)।

तीखापन (मिर्चत्व) → मिठास (शाकर्य) → **[प्रमाण** (ज्ञान)] → **[प्रामाण्य** (सच्चा जानना)]

NotebookLM

प्रामाण्य क्या है?

प्रतिभात विषय अव्यभिचारित्वम्

प्रतिभात (Pratibhat)

ज्ञात हुआ /
जो भासित हो रहा है
(Known)

विषय (Vishaya)

बाह्य पदार्थ /
ज्ञेय (Object)

अव्यभिचारित्वम् (Avyabhicharitvam)

व्यभिचार (गड़बड़) न होना/
जैसा है, वैसा ही ज्ञात होना
(Without deviation)

निष्कर्ष: प्रामाण्य = जाने गए विषय में कोई शंका, विपर्यय या अनध्यवसाय का न होना।
वस्तु जैसी है, उसे बिलकुल वैसा ही जानना।

NotebookLM

यह सच्चाई (प्रामाण्य) पैदा कैसे होती है?

मार्ग 1: उत्पत्ति (Origin)

सत्य पैदा कैसे होता है?
(कार्य की उत्पत्ति के कारण)

इस प्रस्तुति का मुख्य विषय

मार्ग 2: ज्ञप्ति (Apprehension)

सत्य का निर्णय कैसे होता है?
(निश्चय के कारण)

उत्पत्ति के 2 दार्शनिक विकल्प

स्वतः (Intrinsic): क्या ज्ञान स्वयं ही अपनी सच्चाई लेकर उत्पन्न होता है?

परतः (Extrinsic): या सच्चाई किसी अन्य बाह्य कारण (सहयोगी) से आती है?

NotebookLM

पारिभाषिक स्पष्टीकरण: स्वतः और परतः का अर्थ

स्वतः (उसी से)

अभिन्न कारण

परिभाषा: जिस सामान्य सामग्री से ज्ञान उत्पन्न हुआ है, उसी सामग्री से उसकी प्रमाणता (सच्चाई) भी उत्पन्न हो।

दृष्टांत

मिर्ची में तीखापन उसी के अंशों से है, बाहर से नहीं।

परतः (अन्य से)

भिन्न कारण

परिभाषा: जिस सामग्री से ज्ञान उत्पन्न हुआ है, उससे भिन्न किसी अन्य गुण/कारण से प्रमाणता उत्पन्न हो।

दृष्टांत

मनुष्य में सभ्यता (मनुष्यता) केवल जन्म से नहीं, बल्कि स्कूल भेजने और शिक्षा (अन्य कारण) से आती है।

NotebookLM

पूर्वपक्ष (मीमांसक मत): प्रामाण्य स्वतः उत्पन्न होता है

[ज्ञान सामान्य सामग्री (इन्द्रिय, प्रकाश आदि)]

उत्पन्न करती है
[प्रमाण (ज्ञान)]

उत्पन्न करती है
[प्रामाण्य (सत्यता)]

> **ज्ञान उत्पादक हेतु अनतिरिक्त जन्यत्वम् उत्पत्तौ स्वतः।**
>
> (ज्ञान को पैदा करने वाले कारणों से अतिरिक्त कोई अन्य कारण प्रामाण्य के लिए नहीं चाहिए)।

निष्कर्ष: मीमांसक कहते हैं कि जानने की क्रिया ही यह तय कर देती है कि ज्ञान सच्चा है। जिस सामग्री से ज्ञान पैदा हुआ, उसी से सच्चाई भी पैदा हो जाती है।

NotebookLM

खंडन: मीमांसक मत में 'अतिव्याप्ति दोष'

Logic Tree Diagram of Contradiction

The Flaw

यदि सामान्य सामग्री ही **प्रामाण्य** (सच्चाई) का एकमात्र कारण है, तो **उसी सामग्री** से होने वाला **संशय और विपर्यय** भी **'सच्चा'** कहलाना चाहिए!

दोनों में कारण (सामग्री) समान हैं, फिर परिणाम अलग क्यों?

रोटी का दृष्टांत

यदि आटा, पानी और नमक (सामग्री) समान हो, फिर भी एक रोटी अच्छी और दूसरी खराब बनती है, तो इसका अर्थ है कि सामग्री के अलावा भी कोई 'अन्य कारण' (जैसे बनाने वाले का ध्यान) मौजूद है।

NotebookLM

उत्तरपक्ष (जैन सिद्धान्त): प्रामाण्य परतः होता है

[ज्ञान सामान्य सामग्री] + ✨ [निर्मलता (स्वच्छता)] ✨ = प्रमाण (सच्चा ज्ञान)

[ज्ञान सामान्य सामग्री] + ⚠ [दोष (रोग/अस्थिरता)] = अप्रमाण (संशय/भ्रम)

जैन दृष्टिकोण

आचार्य धर्मभूषण स्पष्ट करते हैं कि ज्ञान का सच्चा या झूठा होना ‘अकारण’ (बिना कारण) नहीं है। ज्ञान सामान्य सामग्री से उत्पन्न होता है, लेकिन उसकी प्रामाणिकता इन्द्रियों और मन की स्वच्छता, स्वस्थता और अविकलता रूपी अन्य (परतः) कारणों से आती है।

NotebookLM

दृष्टांत: क्या कपड़ा स्वयं ही 'लाल' हो जाता है?

कपास/धागा → सामान्य सफ़ेद कपड़ा

(यह ज्ञान की उत्पत्ति है)

सफ़ेद कपड़ा + लाल रंग (डाई) › लाल कपड़ा

(यह प्रामाण्य की उत्पत्ति है)

व्याख्या (स्पष्टीकरण)

- जिस प्रकार कपड़े के लाल होने में केवल 'कपड़ा' कारण नहीं है, बल्कि 'लाल रंग' (अन्य हेतु) कारण है।
- उसी प्रकार ज्ञान के 'प्रमाण' (सच्चा) होने में केवल 'ज्ञान सामग्री' कारण नहीं है, बल्कि इन्द्रियों और मन की 'निर्मलता' (अन्य हेतु) कारण है।

NotebookLM

अप्रामाण्य (Invalidity) भी परतः ही उत्पन्न होता है

रोग
(Jaundice / कांचबिंदु)
इन्द्रियों का रोग होने पर दूध भी पीला दिखाई देता है। (शारीरिक दोष)

निद्रा
(Sleep)
नींद या नशे की अवस्था में व्यक्ति अंट-शंट संदेश टाइप करता है। (चेतना का दोष)

अस्थिर मन
(Distracted Mind)
उपयोग अन्यत्र होने पर, कान खुले होने पर भी बात सुनाई नहीं देती। (उपयोग का दोष)

निष्कर्ष: ज्ञान के झूठे (अप्रामाणिक) होने में ज्ञान स्वयं कारण नहीं है, बल्कि यह अस्वच्छता, रोग, और अस्थिरता रूपी अन्य (परतः) कारणों का फल है।

NotebookLM

दार्शनिक दृष्टिकोणों का तुलनात्मक मैट्रिक्स

दर्शन (Philosophy)	प्रामाण्य (Truth)	अप्रामाण्य (Error)
सांख्य (Sankhya)	स्वतः	स्वतः
मीमांसक (Mimamsak)	स्वतः	परतः
बौद्ध (Tathagata)	परतः	स्वतः
जैन (Jain/Nyaya)	**परतः**	**परतः**

जैन दर्शन एकमात्र दर्शन है जो स्पष्ट रूप से मानता है कि प्रमाण और अप्रमाण दोनों ही ज्ञान की सामान्य सामग्री से भिन्न कारणों (निर्मलता या दोष) से उत्पन्न होते हैं।

NotebookLM

सूक्ष्म स्तर पर: ‘परतः’ का अर्थ (सद्भूत व्यवहार)

यदि हम बाह्य इन्द्रियों (असद्भूत) को हटाकर केवल आत्मा के स्तर पर विचार करें, तो भी ‘परतः’ सिद्ध होता है:

जिन अंशों (अविभाग प्रतिच्छेदों) से विषय का ज्ञान पैदा होता है...

उनसे भिन्न अंशों से उस ज्ञान की प्रामाणिकता (सच्चाई) पैदा होती है।

निष्कर्ष: एक ही द्रव्य (आत्मा) की एक ही पर्याय में भी ‘भिन्न अंशों’ की अपेक्षा से ‘परतः’ घटित होता है।

NotebookLM

ज्ञप्तिः हमें कैसे पता चले कि हमारा ज्ञान सच्चा है?

पक्ष 1

अभ्यस्त विषय
(Familiar Object)

उदाहरणः अपना गाँव, अपना घर, परिचित व्यक्ति।

ज्ञप्तिः स्वतः
(देखते ही ज्ञान के साथ तुरंत निर्णय हो जाता है कि यह सही है)।

पक्ष 2

अनभयस्त विषय
(Unfamiliar Object)

उदाहरणः नया शहर, नया विषय, अपरिचित शास्त्र।

ज्ञप्तिः परतः (अन्य काल में, दूसरों से पूछने या परीक्षण करने के बाद सच्चाई का निर्णय होता है)।

महत्वपूर्णः 'ज्ञप्ति' में स्वतः/परतः का अर्थ 'समय और परिचय' से है, उत्पत्ति (पैदा होने) से नहीं।

NotebookLM

निष्कर्ष: सम्यक् ज्ञान की संरचना
प्रमाण (Nature)
उत्पत्ति (Origin)
ज्ञप्ति (Apprehension)
पदार्थों को यथार्थ जानना (सम्यक् ज्ञान)।
प्रामाण्य की उत्पत्ति परतः होती है। (स्वच्छता, निर्मलता, और दोषरहित उपकरणों के द्वारा)।
प्रामाण्य का निश्चय परिचय के आधार पर स्वतः (अभ्यस्त) या परतः (अनभ्यस्त) होता है।
“अध्यात्म और न्यायशास्त्र में निमित्त और उपादान दोनों का अपना महत्व है। ज्ञान का सही होना केवल एक स्वतः घटना नहीं है, बल्कि वह इन्द्रियों, मन और उपयोग की ‘निर्मलता’ रूपी कारणों का फल है।
NotebookLM